17 अप्रैल 2016, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 39, अंक : 2 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
अप्रैल (द्वितीय), 2016 (वीर नि. संवत्-2542) सह-सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

डॉ. भारिल्ल सिंगापुर में

सिंगापुर जैन समाज के आग्रह पर जैन तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार के पावन उद्देश्य से दिनांक 30 मार्च से 6 अप्रैल तक डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल सिंगापुर पधारे।

इस अवसर पर प्रवचनसार की गाथा 80 के आधार पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। डॉ. भारिल्ल के 5 प्रवचन दिगम्बर जिनमंदिर में और दो प्रवचन स्थानक में हुये। स्थानक में शताधिक लोग उपस्थित रहे। दिगम्बर मंदिर में भी 50 से अधिक लोग रहते थे।

प्रतिदिन प्रातःकाल लगभग 2 घंटे तक पूजन-प्रक्षाल हुआ। सभी साधर्मीजन तत्त्व प्रेमी ही नहीं, तत्त्वज्ञान के जानकार भी बहुत अच्छे थे तथा आध्यात्मिक प्रश्नोत्तर भी होते थे।

सम्पूर्ण व्यवस्था श्री अशोकजी पाटनी परिवार एवं मुमुक्षु भाई-बहिनों द्वारा हुई।

ज्ञातव्य है कि सिंगापुर में 5 वर्ष पूर्व तक 5 दिगम्बर जैन परिवार रहते थे, जिनमंदिर नहीं था। एक स्थानक था और 200 घर स्थानकवासियों के थे; परन्तु आज स्थिति बदल गई है। आज दिगम्बरों के 125 घर हैं और चार दिगम्बर जैन चैत्यालय हैं। स्थानकवासियों के भी 400 घर हो गये हैं।

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

17 से 19 अप्रैल	ग्वालियर	महावीर जयंती
22 से 24 अप्रैल	उदयपुर (राज.)	कन्या छात्रावास का उद्घाटन
4 से 7 मई	देवलाली	गुरुदेव जयन्ती
8 मई	दिल्ली	उपकार दिवस
15 मई से 1 जून	विदिशा	प्रशिक्षण शिविर
15 जून से 15 जुलाई	विदेश यात्रा	धर्मप्रचारार्थ
31 जुलाई से 9 अगस्त	जयपुर	महाविद्यालय शिविर
29 अगस्त से 5 सित.	मुम्बई	श्वेताम्बर पर्यूषण
6 से 15 सितम्बर	औरंगाबाद	दशलक्षण पर्व
9 से 14 अक्टूबर	सम्मेदशिखरजी	स्वर्ण जयंती समारोह एवं समयसार विधान

श्रुत स्कंध मंडल विधान एवं चतुर्थ विदाई व दीक्षांत समारोह संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन मुमुक्षु आश्रम कोटा में संचालित आचार्य धरसेन दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय का चतुर्थ दीक्षांत व विदाई समारोह एवं श्रुतस्कंध मंडल विधान दिनांक 23 व 24 मार्च 2016 को संपन्न हुआ।

सर्वप्रथम दिनांक 23 मार्च को श्रुतस्कंध मंडल विधान एवं पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड द्वारा व्याख्यान का लाभ मिला।

इस अवसर पर प्रातःकाल विदाई समारोह का प्रथम सत्र श्री अजयजी बाकलीवाल (अध्यक्ष-सकल दिगम्बर जैन समाज कोटा) की अध्यक्षता में व श्री शांति धारीवाल (पूर्व गृहमंत्री-राजस्थान सरकार) के मुख्य आतिथ्य में संपन्न हुआ। सायंकाल आयोजित द्वितीय सत्र में शास्त्री उत्तीर्ण करने वाले 13 छात्रों ने अपने विचार व आगामी योजना प्रस्तुत की तथा आमंत्रित अतिथियों के आशीर्वचन भी प्राप्त हुये।

कार्यक्रम में श्री ज्ञानचंदजी, श्री प्रेमचंदजी बजाज, पण्डित रतनजी चौधरी, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, डॉ. सांवरमलजी शर्मा, पण्डित सौरभजी शास्त्री आदि महानुभाव मंचासीन थे।

दिनांक 24 मार्च को श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर की अध्यक्षता में दीक्षांत समारोह का आयोजन हुआ। इस अवसर पर शास्त्री उत्तीर्ण कर रहे 13 छात्रों को 'आगम शास्त्री' की उपाधि प्रदान की गई एवं समाज व मुमुक्षु मण्डल द्वारा इन छात्र विद्वानों को सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन शास्त्री द्वितीय वर्ष के छात्रों व पण्डित रतनजी चौधरी द्वारा किया गया।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री द्वारा संपन्न कराये गये।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो,
प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

वर्ष–39 अंक–2, 17 अप्रैल 2016 7 जैन पथप्रदर्शक (पाक्षिक)

1967 – 2017

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष के अवसर पर
शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर में प्रथमबार डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित

समयसार महामंडल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

दिनांक 9 अक्टूबर से 14 अक्टूबर 2016 तक

- 1008 इन्द्र–इन्द्राणियों द्वारा समयसार विधान का विशाल एवं भव्य आयोजन।
- देश के प्रमुख विद्वानों द्वारा प्रवचन, कक्षा एवं गोष्ठियों के माध्यम से तत्त्वज्ञान का भरपूर लाभ।
- टोडरमल स्नातक परिषद् के लगभग 835 स्नातक व टोडरमल महाविद्यालय के 165 वर्तमान विद्यार्थी
  इसप्रकार 1000 विद्वानों का ऐतिहासिक महासम्मेलन।
- प्रथम सभा के इन्द्र हेतु 2 लाख 51 हजार रुपये, द्वितीय सभा के इन्द्र 1 लाख, तृतीय सभा के इन्द्र 51 हजार, चतुर्थ सभा के इन्द्र 21 हजार,
  पंचम सभा के इन्द्र 11 हजार की राशि देकर अपना स्थान शीघ्र बुक करावें।
- विधान में बैठने वाले इन्द्रों को उनकी श्रेणी के योग्य आवास एवं भोजन की नि:शुल्क तथा अन्य शिविरार्थियों को सुविधाजनक
  सशुल्क आवास एवं नि:शुल्क भोजन की समुचित व्यवस्था।
- स्थान सीमित होने के कारण 'पहले आओ पहले पाओ' के आधार पर आरक्षण करना संभव होगा; अत: शीघ्रता करें।

संपर्क :– पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.)
फोन नं.0141–2705581, 2707458, 07297973664, E-mail : ptstjaipur@yahoo.com, ptst50years@gmail.com

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट स्वर्ण जयन्ती महोत्सव वर्ष के अवसर पर
शाश्वत तीर्थराज सम्मेदशिखर में प्रथमबार डॉ. हुकमचंद भारिल्ल द्वारा रचित

श्री समयसार महामण्डल विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर

(रविवार, 9 अक्टूबर से शुक्रवार, 14 अक्टूबर 2016 तक)

आवास आरक्षण पत्र

कृपया सही का निशान लगाईये यदि आप हैं तो :

इन्द्र ☐ श्रेणी – I ☐ II ☐ III ☐ IV ☐ V ☐ स्नातक ☐ डॉक्टर ☐ स्वयंसेवक ☐

विवरण (कृपया फार्म को स्पष्ट/सही भरें)

क्र.	यात्री का नाम	मोबाइल	पु./स्त्री	उम्र	भोजन(हि./गुज./शो.)
1.					
2.					
3.					
4.					

12 वर्ष से छोटे बच्चों का विवरण यहाँ देवें – 1. नाम....., आयु .....

2. नाम....., आयु .....; 3. नाम....., आयु .....

विशेष नोट : यदि आपके साथ 4 से अधिक लोग हैं, तो शेष व्यक्तियों की जानकारी अलग कागज पर लिखकर फार्म के साथ संलग्नकर भेजें।

आवास किसके नाम बुक किया जाये (ग्रुप लीडर का नाम) : _____

पूरा पता : _____

_____ पिनकोड ..... मोबाइल : .....

फोन ..... ई–मेल : .....

शिखरजी पहुँचने की तारीख ..... समय ..... शिखरजी से वापसी की तारीख : .....

साधन एवं उसका विवरण : हवाई जहाज ☐ ट्रेन ☐ बस ☐ अपना साधन ☐

हस्ताक्षर ग्रुपलीडर

नोट : कृपया फार्म को बार–बार या डबल भरकर न भेजें। आवास की डिटेल के लिये पीछे देखें।

1. आवास के आरक्षण हेतु अपनी निर्धारित राशि का चैक/डी.डी./बैंक स्लिप फार्म के साथ अवश्य संलग्न करें।
2. रजिस्ट्रेशन फार्म प्राप्त होने पर, आपको आवास रजिस्ट्रेशन नम्बर पोस्ट/एस.एम.एस. या ई–मेल से भेजा जायेगा।
3. आवास विभाग से संबंधित सभी पूछताछ एवं सूचनाओं के लिये 0141–3106661 पर या +917297973664 पर संपर्क करें।
4. कृपया आईकार्ड हेतु प्रत्येक व्यक्ति अपना पासपोर्ट साईज फोटो साथ में संलग्नकर अवश्य भेजें।
5. शिखरजी में आईकार्ड के आधार से भोजनशाला में प्रवेश होगा, अत: आप जिस भोजनशाला में जाना चाहते हैं, उसे ही टिक करें, बाद में इसे बदला नहीं जा सकेगा।
6. रजिस्ट्रेशन हेतु आवास फार्म भरकर भेजने की अन्तिम तिथि 30 जून 2016 है; स्थान सीमित होने से आरक्षण पहले आओ पहले पाओ के आधार से ही होगा; **अत: शीघ्रातिशीघ्र आवास फार्म भरकर अपना आरक्षण सुनिश्चित करायें।**
7. आप इस फार्म की फोटोकॉपी कराकर अन्य को भी दे सकते हैं।

फार्म भरकर भेजने की अन्तिम तिथि 30 जून

कार्यालय प्रयोग हेतु :–

रजिस्ट्रेशन नं. आवास अलॉटमेन्ट

राशि एवं रसीद नं.

विवरण हेतु पीछे देखें

आवास आरक्षण हेतु नियम

शिखरजी में अनेक प्रकार की आवास व्यवस्थायें हैं। हमने उन सबको समायोजित करने का प्रयत्न किया है। ठहरने हेतु एक कमरे में कम से कम 4 लोगों की व्यवस्था है जो अधिकतम 6 या 8 लोगों तक की हो सकती है। कमरों की क्वालिटी भी अनेक तरह की है, जिसे हमने निम्न श्रेणियों में बाँटा है; अत: हमारा आपसे आग्रह है कि आप जितनी विस्तृत जानकारी फार्म में भरकर हमें भेजेंगे आपकी उतनी अच्छी व्यवस्था करने में हमें सुविधा होगी। आवास फार्म नि:शुल्क/सशुल्क दोनों श्रेणी की व्यवस्था वालों को भरना आवश्यक है।

नि:शुल्क आवास

जो भी भाई इन्द्र–इन्द्राणी के रूप में विधान में बैठ रहे हैं, उन्हें उनकी श्रेणी के अनुसार 4 लोग आराम से ठहर सकें, ऐसा अटैच कमरा आवास हेतु नि:शुल्क उपलब्ध कराया जायेगा।

सशुल्क आवास

जो भाई इन्द्र–इन्द्राणी के रूप में विधान में नहीं बैठ रहे हैं, उनके लिये आवास की सशुल्क व्यवस्था है, जिसकी राशि निम्न प्रकार है –

(1) डोरमेट्री	**100/– प्रतिदिन प्रतिव्यक्ति**
(2) सामान्य कमरा (कॉमन लेटबाथ)	**200/– प्रतिदिन**
(3) सेमी–डीलक्स कमरा (अटैच लेटबाथ)	**300/– प्रतिदिन**
(4) डीलक्स कमरा (अटैच लेटबाथ–पलंग सहित)	**500/– प्रतिदिन**
(5) ए.सी. डीलक्स कमरा	**800 प्रतिदिन**
(6) ए.सी. सुईट	**1200 प्रतिदिन**

कृपया ध्यान दें –

आवास के रजिस्ट्रेशन हेतु प्रति व्यक्ति 250/– रुपये की राशि निश्चित की गई है। जो महानुभाव बिना रजिस्ट्रेशन के सीधे शिखरजी पधारेंगे, वहाँ उन्हें किसी भी प्रकार की व्यवस्था देना हमें संभव नहीं होगा। अत: शीघ्रातिशीघ्र रजिस्ट्रेशन अवश्य करावें।

(1) इन्द्र–इन्द्राणी के लिये आवास रजिस्ट्रेशन शुल्क नहीं है। उनके आवास की बुकिंग हेतु वे जिस श्रेणी के इन्द्र हैं उसकी कम से कम 50% राशि पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के पंजाब नेशनल बैंक, बापूनगर ब्रांच के खाता संख्या 0247000100024619, IFS Code: PUNB0024700 में जमा कराकर बैंक स्लिप की कॉपी या 'पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट' के नाम से A/C Payee at per चैक, ड्राफ्ट आवास फार्म के साथ संलग्न कर भेजें।

(2) जो लोग इन्द्र–इन्द्राणी नहीं बन रहे हैं; परन्तु शिविरार्थी के रूप में शिखरजी आ रहे हैं, यदि वे अंतिम तिथि से पहले आवास शुल्क पूरा भेज देते हैं तो उनके लिये रजिस्ट्रेशन शुल्क फ्री है। वे सशुल्क आवास हेतु जिस श्रेणी का आवास चाहते हैं, उस राशि को उपरोक्त अकाउन्ट में भेजकर उसकी स्लिप फार्म के साथ संलग्न कर भेजें। रजिस्ट्रेशन शुल्क लेना हमारा उद्देश्य नहीं है; अपितु हमारा उद्देश्य आपकी आवास व्यवस्था को सुविधाजनक एवं आरामदायक बनाना है।

(3) इन्द्र–इन्द्राणी एवं जिनके आवास की राशि समय पर प्राप्त हो जाती है, उन्हें 10 सितम्बर तक उनके घर के पते पर रजिस्ट्रेशन किट भेजा जायेगा, जिसमें आई कार्ड, आवास अलॉटमेन्ट लेटर व अन्य सामग्री भेज दी जायेगी, जिससे शिखरजी में किसी तरह की असुविधा न हो और प्रतीक्षा न करनी पड़े।

(4) यह फार्म भरकर आप हमारी ई–मेल आई. डी. ptstjaipur@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं।

(5) रजिस्ट्रेशन हेतु आवास फार्म भरकर भेजने की अन्तिम तिथि 30 जून 2016 है; स्थान सीमित होने से आरक्षण पहले आओ पहले पाओ के आधार से ही होगा; **अत: शीघ्रातिशीघ्र आवास फार्म भरकर अपना आरक्षण सुनिश्चित करायें।**

संपर्क पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए–4, बापूनगर, जयपुर 302015 (राज.) फोन नं. 0141–2705581, 2707458
Mob.: 7297973664 E-mail : ptstjaipur@yahoo.com; ptst50years@gmail.com www.ptst.in

सम्पादकीय –

संस्कारों का महत्व

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

''काम ! काम !! काम !!! जब देखो तब काम, घर में काम, बाहर काम, जहाँ जाओ वहाँ काम – इसकारण न सुबह चैन न शाम को चैन, न दिन में चैन न रात में चैन, चौबीसों घंटे बेचैन। ऐसा काम भी किस काम का ? जिसके कारण खाना-पीना भी हराम हो जाता हो। बाल-बच्चों को संभालना भी कठिन हो जाता है।

इस काम के भूत ने ही तो राजू को बेकाम कर दिया है। उसकी पढाई-लिखाई पर पानी फेर दिया है, उसे आवारा बना दिया है, उसे परिवार के प्रति विद्रोही बना दिया है, और बना दिया है दुर्व्यसनी और दुराचारी।

केवल धन कमाना ही तो जीवन का लक्ष्य नहीं है। धन तो केवल साधन है न ? साध्य तो नहीं, पर हमने उसे साध्य बना रखा है।

अब करना ही क्या है हमें अधिक धन कमाकर। केवल पेट ही तो भरना है, पेटी भरने में तो अब मेरा विश्वास रहा नहीं। देखो न ! यह उक्ति कितनी सटीक है कि –'यदि पुत्र सुपुत्र है तो भी धन का संचय व्यर्थ है और यदि पुत्र कुपुत्र है तो भी धन का संचय व्यर्थ ही है; क्योंकि यदि पुत्र सुपुत्र है, योग्य है, होनहार है तो स्वयं धनार्जन कर लेगा। और यदि वह कुपुत्र है, तब सारा अर्जित धन क्षणभर में बर्बाद कर देगा।'

इसप्रकार दोनों ही परिस्थितियों में, जरूरत से ज्यादा धनार्जन करना व्यर्थ है। अत: अब तो केवल राजू को सन्मार्ग पर लाने का ही मात्र एक-सूत्रीय कार्यक्रम बनाना है। उसी पर पूरा ध्यान केन्द्रित करना है।

जो हो गया सो तो हो ही गया, उसमें सुधार करने के लिये केवल पश्चाताप के आँसू बहाना ही काफी नहीं है। जो भी संभव हो वह उपाय करना भी आवश्यक है।''

डॉक्टर धर्मचन्द बैठे-बैठे इन्हीं विचारों में डूबे हुये थे। उनकी पत्नी कनकलता ने उनका ध्यान भंग करते हुये कहा – ''चाय-नाश्ता तो समय पर ले लो। अभी थोड़ी देर में मरीजों की भीड़ जमा हो जायेगी, फिर सांस लेने को भी समय नहीं मिलेगा।''

डॉक्टर ने कहा –''कनक ! मैं सोचता हूँ, यदि हम दोनों ही घर की प्रेक्टिस-घर पर मरीजों को देखना, उनका उपचार करना बन्द कर दें तो कैसा रहे ?''

डॉ. कनकलता ने गंभीर होते हुये कहा –''आपका सोचना सही है, पर यह डॉक्टर का पेशा ही ऐसा है कि जो एक बार इसे पकड़ लेता है, फिर यह व्यवसाय उसे ऐसा जकड़ता है कि इससे पिण्ड छुड़ाना कठिन हो जाता है। हम छोड़ना भी चाहें तो मरीज हमें नहीं छोड़ेंगे।

सवाल अपनी कमाई का ही अकेला नहीं है, पर उन मरीजों का क्या होगा, जो अपने ऊपर विश्वास किये बैठे हैं ? वे कहाँ जायेंगे क्या करेंगे ? और फिर यह एक तरह से समाज सेवा भी तो है।''

डॉक्टर ने मुस्कराते हुये कहा –''कनक ! यह सब तुम्हारा भ्रम है। यह कोई समस्या भी नहीं है और समाज सेवा भी नहीं। यह तो केवल हमारा पैसा कमाने का तरीका है, तरीका ! अन्यथा सेवा तो हम इससे भी बहुत अच्छी हॉस्पिटल में भी कर सकते थे।

तुम स्वयं डॉक्टर हो, एक ईमानदार डॉक्टर की क्या ड्यूटी है ? यह भी तुम अच्छी तरह जानती हो और अपनी कार्यक्षमता क्या है ? यह भी अच्छी तरह पहचानती हो। जरा, तुम मुझे यह बताओ कि हॉस्पिटल में तुम कितने घंटे में कितने मरीज देखती हो ? और ईमानदारी से कितने देख सकती हो ? घर की डिस्पेंसरी में जो तुम्हारी सजगता, सक्रियता और उत्साह रहता है, क्या हॉस्पिटल में भी वैसी ही सजगता, सक्रियता और उत्साह रहता है। (क्रमश:)

करणानुयोग शिविर

देवलाली-नासिक (महा.) स्थित कहान नगर में डॉ. उज्ज्वला शहा, मुम्बई द्वारा सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका-लब्धिसार-क्षपणासार के आधार से **चारित्रोपशमना शिविर** का आयोजन दिनांक 18 से 22 जून तक होगा, जिसमें प्रतिदिन 6 घंटे एवं अन्तिम दिन 4 घंटे प्रवचनों का लाभ मिलेगा। पूर्व शिविरों में सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका लब्धिसार-क्षपणासार ग्रन्थ सभी साधर्मियो को दिया गया था, वह ग्रन्थ साथ में लाना है। देवलाली में ग्रन्थ सशुल्क उपलब्ध होगा। आवास व भोजन व्यवस्था नि:शुल्क रहेगी। आगमन की पूर्व सूचना देवलाली या मुम्बई कार्यालय में अवश्य दें।

संपर्क सूत्र – दिनेशभाई शहा, 157/9, निर्मला निवास, सायन (पूर्व), मुम्बई 400022 फोन-022-24073581, देवलाली ऑफिस (0253-2491044), मुम्बई ऑफिस - 173/174, मुम्बादेवी रोड़, मुम्बई 400002 फोन-022-23425241

हार्दिक बधाई !

श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक श्री जयेश जैन उदयपुर का विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.) द्वारा आयोजित नेट-2016 परीक्षा में हिन्दी विषय के माध्यम से और श्री तपिश जैन उदयपुर, श्रीमती श्रुति जैन जयपुर व कुमारी प्रतीति पाटील जयपुर का जैनदर्शन विषय के माध्यम से जे.आर.एफ. हेतु चयन हो गया है। साथ ही अनुभूति जैन गुना व नयना जैन खनियांधाना ने जैनदर्शन विषय से नेट-2016 परीक्षा उत्तीर्ण की।

टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार की ओर से सभी स्नातकों को हार्दिक बधाई !

– सह संपादक

(4) स्वर्ण जयंती के मायने (प्रशिक्षण शिविर)

– परमात्मप्रकाश भारिल्ल (कार्यकारी महामंत्री–टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

नवीन पाठ्यक्रम तैयार होने के बाद वीतराग–विज्ञान पाठशालाओं की स्थापना की गई। पाठशालाओं से प्राप्त परीक्षा की उत्तर–पुस्तिकाओं के अवलोकन से ज्ञात हुआ कि छात्र पाठमालाओं में समायोजित तत्त्व के उन मार्मिक बिन्दुओं को ग्रहण नहीं कर पा रहे हैं, जिन्हें सही परिप्रेक्ष्य में समझना अत्यंत आवश्यक है, जैसे कि – **'भगवान जन्मते नहीं, बनते हैं', 'हाथी का शरीर अजीव है और आत्मा जीव', 'मिथ्यात्व सबसे बड़ा पाप क्यों है ?', 'कषायें क्यों उत्पन्न होती हैं और मिटें कैसे ?'** इत्यादि।

उक्त तथ्य को ध्यान में रखते हुये इस बात की आवश्यकता महसूस की गई कि ऐसे अध्यापकों को ट्रेनिंग दी जाये जो कि छात्रों को इस पाठ्यक्रम में समाहित तत्त्व के मर्म को स्पष्टकर समझा सके और छात्रों को आगम और अध्यात्म के अभ्यास की दृष्टि और दिशा मिल सके, इस आवश्यकता की पूर्ति हेतु श्री वीतराग–विज्ञान आध्यात्मिक शिक्षण–प्रशिक्षण शिविरों की एक अनुपम शृंखला प्रारम्भ की गई, जो 47 वर्षों से अनवरत चल रही है और इस शृंखला का 50वाँ स्वर्ण जयंती प्रशिक्षण शिविर इस वर्ष 15 मई से 1 जून तक विदिशा, मध्यप्रदेश में आयोजित होने जा रहा है।

क्या है ये प्रशिक्षण शिविर –

उपर्युक्त प्रशिक्षण किसी कठिन से कठिन कार्य को सरल बना देता है। इन प्रशिक्षण शिविरों में उन सभी आत्मार्थियों को प्रशिक्षित करके इस योग्य बना दिया जाता है कि वे इन पाठमालाओं में आगत पाठ्य सामग्री को पाठशालाओं में इसप्रकार सरल और रोचक शैली में पढा सकते हैं कि थोड़े से ही समय में छात्र न केवल पाठ में समाहित तत्त्वज्ञान के मर्म को सही परिप्रेक्ष्य में समझ जाते हैं, वरन् वह उन्हें कंठस्थ भी हो जाता है। इसप्रकार पाठशालाओं में एक बार अध्ययन कर लेने के बाद कोई भी व्यक्ति आजीवन उन बातों को भूल नहीं सकता है।

ये पाठशालायें छात्रों को न केवल जैनदर्शन का प्राथमिक ज्ञान देती हैं, अपितु आत्महितकारी तत्त्वज्ञान को सही परिप्रेक्ष्य में समझने की दिशा भी दिखलाती है, जिससे व्यक्ति कालान्तर में आगम के अभ्यास द्वारा जैनदर्शन के मर्म को समझ सकता है।

इस प्रशिक्षण में सरकार द्वारा संचालित उस बी.एड. प्रशिक्षण की उन सभी मूलभूत अवधारणाओं को शामिल कर लिया गया है, जो इन पाठ्य पुस्तकों के पाठन में सहायक हैं। इसप्रकार सरकार जिसप्रकार की ट्रेनिंग अब 2 साल में पूरी करती है, हम वैसा ही कार्य मात्र 18 दिनों के इन प्रशिक्षण शिविरों में संपन्न कर लेते हैं।

यहाँ एक प्रश्न सहज ही उत्पन्न होता है कि 47 वर्ष में 49 शिविर कैसे हो गये ?

इसका सहज उत्तर यह है कि वैसे यह शिविर वर्ष में एक बार ग्रीष्मकाल में लगता है; परन्तु दो शिविर कोल्हापुर और मलकापुर शीतकाल में भी लगाये गये।

प्रशिक्षण के प्रकार –

प्रशिक्षण कार्यक्रम को दो भागों में बाँटा गया है –

1. बालबोध प्रशिक्षण
2. प्रवेशिका प्रशिक्षण

बालबोध प्रशिक्षण में छात्राध्यापकों (प्रशिक्षणार्थियों) को बालबोध पाठमाला भाग 1, 2 व 3 को पढाने की ट्रेनिंग दी जाती है।

प्रशिक्षण पाने की योग्यता व विधि –

बालबोध प्रशिक्षण में प्रवेश की योग्यता है कम से कम 15 वर्ष की उम्र होना तथा बालबोध के तीनों भागों में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना तथा प्रवेशिका प्रशिक्षण के लिये योग्यता है वीतराग–विज्ञान पाठमालाओं के तीनों भागों में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण होना तथा बालबोध प्रशिक्षण प्राप्त होना।

पूर्व में पाठमालायें उत्तीर्ण न किये जाने की स्थिति में प्रशिक्षण शिविर के प्रथम दिन प्रवेश परीक्षा देकर प्रथम श्रेणी में सफल होने पर भी उक्त प्रशिक्षण में प्रवेश प्राप्त किया जा सकता है।

प्रशिक्षण की प्रक्रिया –

प्रत्येक प्रशिक्षण के लिये दिन में दो बार ढाई घंटे की मुख्य कक्षायें और एक बार एक घंटे की अभ्यास कक्षा होती है।

मुख्य कक्षायें सामूहिक होती हैं, जिनमें एक कक्षा शिक्षण पद्धति की व दूसरी कक्षा सिद्धांतज्ञान की होती है।

अभ्यास कक्षाओं में प्रशिक्षणार्थियों को सिखाई गई उपयुक्त शिक्षण पद्धति से पढाने का अभ्यास करवाया जाता है। इन कक्षाओं में एक प्रशिक्षणार्थी शिक्षक बनकर बतलाया गया पाठ पढता है और अन्य प्रशिक्षणार्थी छात्र के रूप में बैठकर पढते हैं। प्रशिक्षक और अन्य प्रशिक्षणार्थी पढाने वाले प्रशिक्षणार्थी की शिक्षण पद्धति संबंधी गलतियाँ नोट करते हैं तथा पढाने की प्रक्रिया पूरी हो जाने के बाद प्रशिक्षक व अन्य प्रशिक्षणार्थी उसकी समीक्षा करते हैं। इसप्रकार सभी प्रशिक्षणार्थी निरंतर सजग रहते हैं व उन्हें संपूर्ण शिक्षण पद्धति का बारीकी से अध्ययन करने का अवसर मिलता है।

उक्त कक्षायें 20–20 प्रशिक्षणार्थियों के छोटे–छोटे ग्रुप में होती हैं, ताकि प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी को अभ्यास करने का पर्याप्त अवसर मिल सके व प्रशिक्षक प्रत्येक प्रशिक्षणार्थी पर व्यक्तिगत रूप से पर्याप्त ध्यान दे सके।

(क्रमशः)

सिद्धचक्र महामंडल विधान संपन्न

जसवंत नगर-इटावा (उ.प्र.) : यहाँ जैन जागृति मंच के तत्त्वावधान में दिनांक 28 मार्च से 4 अप्रैल 2016 तक सिद्धचक्र महामंडल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर द्वारा प्रवचनों का लाभ मिला। रात्रि में पण्डित निलयजी शास्त्री आगरा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री जसवंतनगर आदि विद्वानों द्वारा गोष्ठी के माध्यम से लाभ प्राप्त हुआ। तत्पश्चात् सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना के निर्देशन में पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर व श्री अकलंक जैन द्वारा संपन्न कराये गये।

कार्यक्रम का संचालन अनाकुलजी जैन मंगलार्थी द्वारा किया गया। इस अवसर पर जैन जागृति मंच द्वारा पण्डित अच्युतकांतजी शास्त्री को 'युवा गौरव' की उपाधि प्रदान की गई। **- चेतन जैन**

भिण्ड (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 4 अप्रैल को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रात: एवं दोपहर पंच परावर्तन एवं आत्मानुभूति विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला। साथ ही टोडरमल स्मारक स्वर्ण जयंती के संदर्भ में जानकारी प्रदान की गई। **- विवेक शास्त्री**

अतिथि गृह का लोकार्पण

द्रोणगिरि (म.प्र.) : आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के प्रभावना योग में निर्मित तीर्थधाम सिद्धायतन में श्री महेन्द्रकुमार राहुलकुमार विनीत कुमार गंगवाल परिवार द्वारा 24 कमरों का आधुनिकतम सर्वसुविधायुक्त तीन मंजिला **'धार्मिक गाथा निलय'** अतिथि भवन का निर्माण कराया गया है। इसका लोकार्पण दिनांक 10 व 11 अप्रैल को भव्य समारोहपूर्वक संपन्न हुआ।

इसके पूर्व रत्नत्रय मंडल विधान एवं भक्तामर मंडल विधान का आयोजन हुआ। इस अवसर पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही पण्डित रतनचन्दजी कोटा, संजयजी सेठी एवं मनीषजी कहान की उपस्थिति रही।

दिनांक 10 अप्रैल को गंगवाल परिवार के निवास से मंगल कलश शोभायात्रा निकाली गई। दिनांक 11 अप्रैल को प्रवचनोपरान्त उद्घाटन सभा हुई, जिसमें भवन के निर्माता श्री महेन्द्रकुमार राहुलकुमार विनीत कुमार गंगवाल परिवार का हार्दिक स्वागत किया गया। पूरे क्षेत्र से आये हुये अनेक विशिष्ट महानुभावों एवं सैंकड़ों साधर्मियों की उपस्थिति में अतिथि गृह की उद्घाटन विधि संपन्न हुई।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयजी देवलाली, पण्डित राजकुमारजी उदयपुर एवं डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने संपन्न कराये।

समस्त कार्यक्रम पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं पं. राजेशजी शास्त्री शाहगढ के निर्देशन में संपन्न हुये।

पाठकों के पत्र...

टोडरमल स्मारक के 50वें वर्ष में प्रवेश के उपलक्ष्य में विदिशा (म.प्र.) निवासी श्रीमंत सेठ श्री राजेन्द्रकुमारजी जैन (अध्यक्ष-श्रीमंत दानवीर सेठ शिताबराय लक्ष्मीचंद जैन पारमार्थिक न्यास) लिखते हैं -

मान्यवर पूज्य बड़े दादा पण्डित रतनचंदजी एवं प्रबुद्ध विद्वान शिरोमणि डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल,

सादर जय जिनेन्द्र।

वीतराग-विज्ञान का 26 मार्च 2016 का अंक प्राप्तकर स्वर्ण जयंती प्रसंग की सुनियोजित योजना को संपूर्ण वर्ष में संपन्न/आयोजित करने का समाचार मिला। वह बड़ा ही प्रशंसनीय है।

पूज्य अध्यात्ममूर्ति गुरुदेवश्री के वियोग के बाद अध्यात्मधारा को आपने निरंतर प्रवाहित-प्रकाशित किया, यह स्तुत्य है।

सन् 1967 के टोडरमल स्मारक पंचकल्याणक में सपरिवार आया था। उसके पश्चात् पूज्य गुरुदेवश्री के साथ तीर्थयात्रा संघ में भी गया था।

आपके सान्निध्य में जयपुर की सभी व्यवस्थायें, विद्यालय, शिक्षण-प्रशिक्षण उत्सव, शिक्षण महोत्सव गरिमापूर्ण अध्यात्म की छटा बिखेरते हैं। लेखन और प्रकाशन में तो आपका अपूर्व ही विधि-विधान है। आज हर आध्यात्मिक घर आपकी लेखनी/प्रकाशन से भरपूर है। पूज्य गुरुदेवश्री की स्मृति और साक्षात् दर्शन भी सी.डी., डी.वी.डी. से प्राप्त होते हैं।

इन 50 वर्षों में सोचें तो तत्त्वज्ञान को क्या नहीं हुआ ? यहाँ हर क्षेत्र बाग जैसा खिल रहा है। स्वस्वभाव को संभालने में आपकी कृतियाँ और कार्य सदैव तत्पर हैं।

स्वर्ण जयंती के बाद हीरक जयंती तक आपकी योजनायें और अध्यात्म चैतन्य जागृत होता रहे - यही मंगल भावना है।

शोक समाचार

भीलवाड़ा (राज.) निवासी श्री सुकुमालजी पाटोदी का दिनांक 6 फरवरी को 62 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 5100/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मा शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही भावना है।

प्रकाशन तिथि : 13 अप्रैल 2016

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127